बिश्नोई विवाह पाटी

सम्पादक एवं टीकाकार-
श्रीमहन्त शिवदास जी शास्त्री
रूड़कली, जोधपुर

-: प्रकाशक :-
जांभाणी साहित्य अकादमी

''श्री विष्णवे नमः''

बिश्नोई विवाह पाटी

प्रकाशक : जांभाणी साहित्य अकादमी
सैक्टर-1, ई-134, जयनारायण व्यास कॉलोनी
बीकानेर, (राजस्थान)
Email - jsakademi@gmail.com

संस्करण : 2013

मूल्य : 20/-

ISBN : 978-93-83415-07-6

© जांभाणी साहित्य अकादमी

-: मुद्रक :-

साहित्य संस्थान गाजियाबाद - 201102
मो. 09968047183

Bishnoi Vivah Pati by Shreemahant Shivdas Shastri

Pages : 40

आत्म निवेदन

विश्नोई पंथ की विवाह पद्धति अन्य समाजों से अपने आप में विशिष्ठ तथा उत्कृष्ट है। जाम्भाणी विवाह पाटी में विशेष रूप से चौजुगी, मंगलाष्टक, गौत्राचार, वसंदर के नाम, साखोचार, चौरासी बोल, ध्रुव स्तुति इत्यादि का विधिवत पाठ किया जाता है। मौखिक परम्परा के बाद हस्तलिखित जाम्भाणी विवाह पद्धति पाटी 18वीं सदी से मिलनी प्रारम्भ होती है। सबसे प्राचीन हस्तलिखित प्रति प्रसिद्ध संत कवि परमानंदजी बिणियाल द्वारा लिपिबद्ध प्राप्त होती है। बाद के वर्षो में दर्जनों जाम्भाणी संत कवियों द्वारा विवाह पाटी को लिपिबद्ध किया गया। इसमें मयारामदासजी (लिपिबद्ध वि.स. 1849), बिहारीदासजी (लिपिबद्ध वि.स. 1902-03), गोविन्दरामजी (लिपिबद्ध वि.स. 1907), साहबरामजी राहड़ (लिपिबद्ध वि.स. 1940), संतोषदासजी (लिपिबद्ध वि.स. 1952) तथा अनेकों अज्ञात लिपिकार शामिल है। जाम्भाणी परम्परा के सन्तों के मुखारविन्द से उच्चरित कविता परक हस्तलिखित विवाह पद्धति पहले भी कई बार छप चुकी हैं परन्तु इन आधुनिक सम्पादकों को इस विषय का सम्पूर्ण ज्ञान न रहा होगा जिसके कारण यह विवाह पद्धति पूर्ण रूप से क्रमबद्ध ढ़ंग से प्रकाशित नहीं हो सकी।

प्रस्तुत जांभाणी विवाह पाटी सभी प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों का अध्ययन करने के बाद तथा वर्तमान में बहुप्रचलित पाठ के अनुसार सम्पादित की गई है। 'जाम्भाणी साहित्य अकादमी' ने इस विषय को मुकाम मेले की बैठक में मेरे सामने रखा। मैंने इसको सहर्ष स्वीकार किया । अकादमी को भी विश्वास हो गया कि मैं अपनी वर्षो की जानकारी के आधार पर इसको अच्छी तरह से सम्पादित कर सकूगां। मैने यह पूर्ण प्रयास भी किया है कि लोगों को ''विवाह पद्धति'' की पूर्ण जानकारी हो। प्रत्येक विवाह करवाने वाले को विवाह पद्धति पढ़ने के बाद यह समझ आ जावे कि विवाह संस्कार

कैसे सम्पन्न होता है। विवाह पाटी का यह कार्य हमेशा पाठ करने वाले को तो पता था परन्तु नये व्यक्ति के लिए बहुत कठिन होता था, इसलिये फिर भी मैंने इस कार्य को हर व्यक्ति को इस संस्कार का ज्ञान हो जाये, इस हेतु से किया है। मेरा यह पूर्ण प्रयास रहा है कि यह बात सबके मस्तिष्क मे बैठाई जावे कि विवाह का संस्कार बड़े उत्साह व शांति पूर्वक सम्पन्न हो। जिससे समाज मे जागृति आवे और सबको संतुष्टि हो। इस विवाह पद्धति में पर्दा मंत्र, गांठ मंत्र, हथलेवा मंत्र, गौत्राचार, सबदवाणी पाठ, कलश पूजा, पाहल मंत्र, दशावतार पाठ, साखोचार, चौजुगी पीढी पलटन मंत्र, दूसरी बार गोत्राचार, मंगलाष्टक, साखोचार, चौजुगी, वर से वचन मांगने का मंत्र, वधू से वचन मांगने का मंत्र इत्यादि को क्रम पूर्वक रखा गया है, जिसको प्रत्येक व्यक्ति आसानी से समझ सकेगा।

इस कार्य को मैं तभी सफल समझूंगा जब आप सब लोग विवाह पद्धति को समाज में पूर्ण रूप विधि विधान तथा क्रमबद्ध पढ़ते हुए नजर आवेगें।

श्रीमहन्त शिवदास शास्त्री
रूड़कली, जोधपुर।

मुखबंध

विवाह कार्यक्रम में सबसे पहले सन्त को घर बुलाकर घर में गुरु जम्भेश्वर भगवान की सबदवाणी के 120 सबदों का पाठ करवाना तथा पाहल बनवाना चाहिए। इस समय सम्पूर्ण परिवार वाले पाहल ले और घर में पाहल का छिड़काव कर पवित्र करें। इसके बाद ही विवाह कार्यक्रम की शुरुआत करनी चाहिए। बिश्नोई संस्कृति के अनुसार विवाह का समय गोधूली वेला (सायं 6 से 9 बजे तक) को उत्तम माना गया है। यह बात डोरा बांधने वाले को ध्यान में रखनी चाहिए। इसका कारण यह है कि गोधूली वेला ब्रह्म मुहूर्त का समय माना जाता है।

जब विवाह समारोह का कार्य शुरु होता है तो सबसे पहले वधू परिवार वाले ही इस समारोह की शुरुआत करते हैं। जिस घर परिवार मे लड़की का विवाह करना है, उस लड़की के परिवार वाले यानि माता-पिता इस कार्यक्रम को अपने घर से शुरु करते हैं। सर्व प्रथम अपने घर को नया रूप दिया जाता है। अपने सगे-संबंधियों को बुलाकर विवाह का दिन तय किया जाता है जिसको डोरा बांधना कहते हैं।

जिसमें अपने परिजनों, लड़की के मामा-मामी, संगे-संबंधी पास-पड़ौस के संबंधियों को आमंत्रित किया जाता है। जिससे सबको पता चल जाता है कि अमुक व्यक्ति के यहां अमुक दिन, अमुक वार, अमुक तारीख को लड़कियों के विवाह का कार्यक्रम है और जिसमें सबको सहयोग करना है । पास पड़ौस व संबंधी सहयोग करते भी है। विवाह समारोह के दिन पास-पड़ौस व संबंधी आकरके हलवा आदि तैयार कर लेते है जिससे सारी तैयारी एक साथ हो जाती है।

डोरा बांधना - डोरा बांधने की प्रकिया में डोरा (कच्चे सूत का धागा) को हल्दी से रंगा जाता है। उसके बाद उस धागे में चांदी का तुस पिरोया जाता है। उसके बाद धागे में गाठें लगाई जाती है। गांठ उतनी ही लगाई जाती है जितने दिनों के बाद विवाह समारोह का आयोजन तय होता है। प्रत्येक दिन एक-एक गांठ खोलते जाते हैं। पुराने समय में बारात डोरे के गांठ के अनुसार ही चढ़ जाती थी। डोरे के गांठ से यह पता चल जाता था कि अमुक वार, दिन व तारीख को विवाह का कार्यक्रम होगा। उस धागे को रंगने के बाद नारियल में दस, बीस, पचास रूपये के साथ बांधकर एक सुती कपड़े का नातणा लेकर उसके

चारों पल्लों को व बीचो–बीच भाग को हल्दी से रंग लेते है। नातणे के गांठ लगा दी जाती है। उस बंधे नारियल को लड़की पक्ष के दो चार सदस्य लड़के के घर ले जाते हैं। वर पक्ष के वहां बड़ी खुशी के साथ नारियल को स्वीकार किया जाता है। अपने संबंधियों को आमंत्रित करके सभी लोग आकर बैठ जाते हैं। तब नारियल लेकर आने वाले लोग अपने पास से नारियल को थैली में से निकालकर थाली में रखकर लड़के वालों को देते हैं। लड़के वाले डोरे को बान कर ले लेते हैं। नारियल लेकर आने वालो को वर पक्ष वाले खुशी में कुछ उपहारादि भेंट करते हैं। उसके बाद लड़की व लड़के वाले अपनी अपनी तैयारी में लग जाते हैं।

वर पक्ष वाले जान चढ़ाने की तैयारी में लग जाते हैं। वर पक्ष को वधू के लिए बरी (ड्रैस), शृंगार पेटी, सिर का बोल्डा (रखड़ी), कान में टोटी (टोप्स), पैर में पायल लाना अनिवार्य होता है। यदि ये वस्तुएं नहीं लाते हैं तो अच्छा नहीं माना जाता है। जिस लड़के का डोरा आता है उसको जान चढ़ने से तीन दिन पहले घी पिलाया जाता है तथा बाजोट बिठाने की रस्म अदा की जाती है। उस दिन से वह बींद अपने हाथ में एक तलवार, सिर पर साफा व एक पड़कन (अपना साथी) साथ में रखता है तथा पास पड़ौस के लोग उसको बन्दौला (भोजन देकर) उसके उत्साह को बढ़ाते हैं।

बन्दौला देने वाला दुल्हे के घर कहने के लिए आता है तो दुल्हे के घर वाले उसका निमंत्रण स्वीकार करते हुए उसको अपने घर से गुड़ देते हैं। जिससे यह तय माना जाता है कि बन्दौला अमुक के घर पर ही होगा। दुल्हे के घर वाले जो गुड़ देते है उससे ही दुल्हे के खाने के लिए लापसी बनाते हैं। भोजन तैयार होने के बाद दुल्हे को अपने घर से कुछ छोटे–बच्चे व बहन, भाभियां उसको गीत गाती हुई बंदोले वाले घर ले जाती है। बन्दोले के समय दुल्हे के साथ एक व्यक्ति (नाई) साथ मे रहता है जो दिन को दुल्हे के चुनड़ी के मण्डप का पल्ला पकड़े रखता है और रात के समय बन्दौले में दुल्हे के आगे प्रकाश लिए चलता है। दूसरा व्यक्ति ढोली होता है जो ढोल बजाता हुआ दुल्हे को भोजन करने बाद वापिस अपने घर ले जाता है। साथ ही स्त्रियां भी गीत गाती हुई चलती है।

वर पक्ष वाले घर में जिस दिन जान चढ़ाएगे उस रात्रि को रात मे रातिजोगा व विवाह के गीत सुबह 4 बजे तक स्त्रियां गाती है। उसके

बाद अपने रीति रिवाज के अनुसार कहीं–कहीं पर हलवा बनाकरके भी बांटती है। कहीं पर गुड़ बांटकर खुशी के गीत गाते हुए नाच–गाने भी होते है। यह सारा कार्यक्रम लड़का भी देखता है तथा वहां स्त्रियां बनड़े के हल्दी से पीठी भी करती है। पीठी को बहन, भाभियां चढाती है। जिस दिन वर को वधू के घर जाना होता है उस दिन जान चढ़ने से दो घंटे पहले नाई वर को आटा, हल्दी, व तीली का तेल मिलाकर दुल्हे को स्नान करवाता है। पुराने कपड़े नाई ले जाता है तथा नया कपड़ा दुल्हे को पहना देता है। आटा, हल्दी व तेल से स्नान करना शुभ माना जाता है तथा वर का रूप निखर जाता है। नये कपड़ो में धोती, कुर्ता, सिर पर रंगीन मोलिया (साफा) पहनाया जाता है। श्रद्धानुसार कानों में सोने के गोखरू या मुर्की आदि पहनायी जाती है। गले में सोने की चैन या डोरा पहनाया जाता है। कहीं–कहीं पर रूपयों की माला भी डालते हैं तथा पैरों में नई पगरखी पहनाई जाती है। उसके बाद बीद को पीढे पर बैठाकर पीठी चढाई जाती है। पीठी बहन, भाभियां चढ़ाती है। पैर के ऊपर की ओर चढाती है। पीठी पैर, घूटने, सीना या छाती, कंधा तथा सिर पांच जगह पर हल्दी का तिलक लगाकर के चढाई जाती है। उसके बाद दुल्हे की माँ आरती करती है। आरती करते समय पड़ौस की स्त्रियां बच्चे आदि दुल्हे के पास मे खड़े रहते है। आरती करने के बाद बींद को उसकी माँ अपने स्तन से दूध पिलाने की रस्म अदा करती है। उसके बाद वर अपने घर से वधू के घर के लिए रवाना हो जाता है।

दुल्हा रवाना होते समय साधु संतो, नाई, गायणा आदि को अपनी तरफ से नेक देता है। जिसमें 10 रुपये से अपनी इच्छानुसार नेक देने का रिवाज है। बारात जब रवाना होती है तो दुल्हे के एक पड़कन नियुक्त होता है जिसमे बड़ा भाई, काका या मामा आदि रहते है। बारात पहले ऊँटो पर जाती थी आजकल गाड़ियों में जाती है।

बरात (जान) के वधू के घर पहुंचने पर ठहरने के लिए डेरों की व्यवस्था होती है। वहां जान रुक जाती है। रुकने के बाद जानियों में से चार–पांच आदमी एक खेजड़ी की डाली लेकर वधू पक्ष वालों को सूचना देने के लिए घर में जाते है। वहां पर उनका नाम, पता, लिखकर वधू के घर वाले उनको एक नारियल, घी–रोटी का चूरमा बनाकर (कंवर कलेवा) थाली देते है। जान वाले थाली लेकर डेरे मे वर को भोजन कराते है। बाकी जानी पठ्ठे मे जाकर भोजन करते है।

सभी बारातियों के भोजन करने के उपरान्त वधू के घर वाले बारात मे गायणा व नाई से सूचना करवाते हैं कि पडोला यानि (कपड़ा, गहना आदि) लेकर आवे। पडोला देने के बाद जान को गुलेरा पर बुलाते है। गुलेरा में नाई वर को गुड़ का रस पिलाता है। वधू पक्ष की चार-पांच लड़कियां वर की हल्दी पीठी उतारती है। उसके बाद सासू आरती करती है। तत्पश्चात् दुल्हा तोरण पर आता है तो बढ़बेड़ा बान्दता है। जिसमें वधू पक्ष की लड़कियां कोरी मटकी में पानी भर के लाती है। वर पक्ष वाले तलवार व बोरड़ी (बेरी) की एक छड़ी वधू पक्ष वालों को पकड़वाते है। वधू पक्ष वाले पानी से भरी हुई मटकी व तलवार छड़ी को बान के तोरण के नीचे से वर से बांधते है। जिसमें तलवार वर को संकेत दे रही है कि आप जो शादी करने जा रहे है वह तलवार की तरह सत्य की धार पर चलना है। छड़ी संकेत दे रही है कि आप जो शादी कर रहे वह कांटो के ताज के समान है, आप ध्यानपूर्वक इसको निभाना। पानी की तरह निर्मल रहना। उसके बाद दुल्हा पीढ़े पर आकर बैठ जाता है। उसका उतर की तरफ मुख रहता है। पहले वधू को दायें हाथ की तरफ लाकर बैठा दिया जाता है। आधा विवाह होने के बाद वधू को बायें हाथ की तरफ बैठाते है जिससे यह संकेत मिलता है कि यह पत्नी रूप मे स्थाई जीवन बिताएगी। विवाह पूर्ण होने पर पहले सासू आरती करती है। आरती के बाद कन्या को दान दिया जाता है। जिसमें कपड़े, रूपये तथा छोटी बछड़ी दान मे दी जाती है। उसके बाद कन्या व वर को कहीं-कहीं पर अग्नि परिक्रमा भी करवाई जाती है। मारवाड़ में अग्नि परिक्रमा का रिवाज नहीं है, केवल अग्नि पूजा ही की जाती है। उसके बाद हवन के पास बैठाकर पाहल दिया जाता है। पाहल पहले वर को देते हैं तथा बाद में वधू को देते हैं। इसके बाद वर को खड़ा करके ध्रुव तारे की शपथ दिलाई जाती है। जिस तरह ध्रुव तारा स्थाई है उसी तरह आपकी शादी जीवन भर स्थाई रहे। उसके बाद वधू घर मे चली जाती है। दुल्हा वहीं पर व्यवस्था के अनुसार अपने स्थान पर बैठ जाता है। कहीं कहीं ऐसा रिवाज है कि उसी समय सीख (विदाई) देते है। कहीं पर दूसरे दिन सुबह को सीख (विदाई) देते है। सीख (विदाई) देने पर वर-वधू को अपने घर ले जा कर रीति-रिवाज के अनुसार बधारकर घर मे ले लेता है। उसके बाद वर-वधू दोनों ही व्यवहारिक जीवन जीते है।

:: विवाह पाटी प्रारम्भ ::

पड़दा करने का मन्त्र

ओम पश्चिम तो शिवजी बसे, पूर्व बसे जादुराम।
सर्प तणों फणकार से, सनक-सनक जी जाय।।1।।
सर्प ज्यों संकट भयो, गरुड़ तणों मन खोट।
हिमाचल पुत्री यो कहे, दो अन्तर पट ओट।।2।।

गांठ का मन्त्र

प्रणम्य शिरसा देवं, गौरी सुतं गजमुखम्।
यस्मरे नित्यं भक्त्यानु आयुकामार्थ सिष्ये।।3।।
बीजं श्रुतीनां सुधनं मुनीनां, जीवं जडानां महदादि का-नाम।
अग्नये मस्त्र भवपातकानां, विवाह विघ्न समनयसदा ।।4।।
मासस्य मासस्यैण, वा रक्षतु च परमेश्वरः।
हाटक मुरादिघ्ने, तस्योप इहातु सन्त छते।।5।।

हथलेवा जोड़ने का मन्त्र

पाणि ग्रहणं कुरु वेहं, कन्या वरयोश्चैवात्र।
अग्यां कुरुवन्ते सर्वे, सभ्याश्च पितरो तयों ।।6।।
मंगलं भगवान विष्णुं, मंगलं गरुड़ ध्वजम्।
मंगलम् पुण्डरीकाक्षं मंगलाय तनों हरि।।7।।
सांख्यकं च अग्निदेवा, नल तेजो वसुंधरा।
वारादि सुराश्च सर्वे, रक्षकं कन्या च वरौ।।8।।
शंकरं गणपत्यैव विघ्नहातु विनायकम्।
शुभं सकलं करै युवां, वरं ददाति लम्बोदरम्।।9।।

वर वधु आशीर्वचन

कमल भूतनया मुख पंकजे, वपुसते कमलाकर पलबे।
वपु सते रमतां कमलां, प्रति दिनं हृदय कमला पतिः।।10।।

अग्नि आह्वान मन्त्र

वृष वाहन समारूढ़ो सप्त जिह्वा हुतासनम्।
शान्तिकं पुष्टिकं चैव, अग्नि आवाहयाम्यहम ।।11।।
केशवं कण्डरीकाक्षं, माधवं मधुनदनम्।
लक्ष्मी सहीतो देवेन, विष्णुं आवाहयाम्यम्।।12।।

वासंदर के पच्चीस नाम

वासुदेवं सुन्दरं मुखं, बण दहेण दावानल अगन।
अरीठ अगम अगोचर, धन तपण बन दहेन ।।13।।
हुवा श्री चक आतस धूत, अचंगल जलण।
जागण जालंधर अंगार कोसन महेश लोचन।।14।।
स्यामंगल वासंदर, सुखजोजन चूड़ा करण।
मड़चरण गुरुपधारण साधु दर्शने पुनः प्रकाशते।।15।।
ऐती क्रिया जे पालते, सनमुख पाप नासते।
इति पच्चीस नाम पढ़न्ते सुणन्ते।
जाका सत्र दोष दिने दिने सर्व पाप क्षय जायते ।।16।।

गोत्राचार

ओ३म् सन्मुखे सन्मुखे जदूवासरुपम्। पूज्यत्रम् सामनिधिम्। गुण निधिम्। आकाश पितरम्। सतारामम्। पंचम पाताल मुखम्। वरुणते शिवमुखम्।।1।। श्री पार्वत्युवाच। कस्मिन् मासे, कस्मिन् पक्षे, कस्मिन् तिथौ, कस्मिन् वासरे, कस्मिन् नक्षत्रे, कस्मिन् लग्ने उत्पन्नेऽसौ।।2।। श्री महादेव उवाच। आषाढ मासे, कृष्ण पक्षे, अर्द्ध

रात्रौ, मीन लग्ने, चतुर्दश्यां, शनिवासरे, रोहिणी नक्षत्रे, ऊर्ध्वमुखे, दृष्टपाताले, अगोचर नामाग्निः।।3।। श्री पार्वत्युवाच। कातस्य माता, क्वतस्य पिता, क्वतस्य गौत्रः, कतिजिह्वा प्रकाशितः।।4।। श्री महादेव उवाच। अरणस माता, वरुणष्पिता, शाण्डिल्य गौत्रे, वनस्पति पुत्रम्, पावकनामकम् वसुन्धरम्।।5।। चत्वारिशृंङ्गा त्रयो अस्य पादा, द्वे शीर्षे, सप्त हस्तासो अस्य। त्रिधावद्धो वृषभोरोरवीति महादेवोमर्त्यां आविवेश।।6।। निखिल ब्रह्माण्डमुदरे यस्य द्वादश लोचनम् सप्त जिह्वा।।7।। काली कराली च मनोजवा च सुलोहिताया च सुधुम्र वर्णा। स्फुलिङ्गिनी विश्वरूपी च देवी लेलायमाना इति सप्त जिह्वा।।8।। प्रथमस्तु घृतम्। द्वितीये यवम्। तृतीये तिलम्। चतुर्थे दधि। पंचमे क्षीरम्। षष्ठे श्रीखण्डम्। सप्तमे मिष्टान्नम्। एतानि सप्त अग्नेर्भोजनानि।।9।। एतैः सप्त जिह्वा प्रकाश्यन्ते, ऊर्ध्वमुखा धोमुखा भिमुखैः सहाय्यंकरोति। घृतमिष्टान्नादि पदार्थाः महाविष्णु मुखो प्रविशन्ति। सर्वे देवा ब्रह्मा विष्णु महेश्वरादयस्तृप्यन्ति।।10।।

वेद मन्त्र

अग्निमीले पुरोहितम् यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥11॥
अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनै रुतसदेवां एहवक्षति॥12॥
अग्निनारयि मश्नवत्पोषमेव दिवे दिवे। यश संवीरवत्तमम्॥13॥
अग्नेयं यज्ञ मध्वरं विश्वतः परिभूरसि। सइद्देवेषु गच्छति॥14॥
अग्निर्होता- कविक्रतुःसत्यश्चित्रश्रयस्तमः देवोदेवेभिरागमत् ॥15॥
यदंगदाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि। त्वेत्तत्सत्यमंगिरः ॥16॥
उपत्वाग्ने दिवे दिवे दोषावस्तर्धियावयम्। नमो भरंत एमसि॥17॥
राजतमध्वराणां गोपामृतस्यदीदिविम्। वर्धमानं स्वेदमे॥18॥
सनः पितेव सूनवे अग्नेसुपायनोभव। सचस्वानः स्वस्तये॥19॥
अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्
युयोध्य-स्मज्जुहुराणमेनो भुयिष्ठा ते नम उक्तिं विधेम॥20॥

सबदवाणी

सबद-1

ओ३म् गुरु चीन्हों गुरु चीन्ह पुरोहित। गुरु मुख धर्म बखांणी। जो गुरु होयबा सहजै शीले शब्दे नादे वेदे। तिहिं गुरु का आलिंकार पिछाणी। छव दरशण जिहिं के रूपण थापण। संसार बरतण निज कर थरप्या। सो गुरु प्रत्यक्ष जाणी। जिहिं के खरतर गोठ निरोतर वाचा। रहिया रुद्र समाणी। गुरु आप संतोषी अवरां पोषी। तत्त्व महारस बाणी। के के अलिया बासण होत हुताषण तामै क्षीर दुहीजूं। रसूवन गोरस घीय न लीयूं तहां दूध न पाणी। गुरु ध्याइयेरे ज्ञानी। तोड़त मोहा अति खुरसांणी। छीजत लोहा पाणी। छल तेरी खाल पखाला सत गुरु तोड़े मन का साला। सत गुरु है तो सहज पिछाणी। कृष्ण चरित्र बिन काचे करवे रह्यो न रहसी पाणी।।1।।

सबद-2

ओ३म् मोरे छाया न माया लोहू न मांसू रक्तु न धातु। मोरे माई न बापूं आपण आपूं। रोही न रापूं, कोपूं न कलापूं, दु:ख न सरापूं। लोई अलोई, त्यूं तृलोई, ऐसा न कोई जपां भी सोई। जिहिं जपे आवागवण न होई। मोरी आद न जाणत। महियल धूंवां बखाणत। उर्ध ढाकले तृसूलूं। आद अनाद तो हम रचिलो। हमें सिरजीलो सैकौण। म्है जोगी के भोगी के अल्प अहारी। ज्ञानी कै ध्यानी। कै निज कर्म धारी। सोषी के पोषी। के जल बिंबधारी। दया धर्म थापले निज बाला ब्रह्मचारी।।2।।

सबद-73

ओ३म् हरी कंकहड़ी मंडप मैड़ी, जहां हमारा बासा। चार चक नव दीप थरहरै, जो आपो परकासूं। गुणियां म्हारा सुगणा चेला, म्हे सुगणा का दासूं। सुगणा होय से स्वर्गे जासै, नुगरा रहा निरासूं। जाका थान सुहाया घर बैकुण्ठे, जाय संदेसो लायो। अमियां ठमियां अमृत भोजन, मनसा पालंग सेज निहाल बिछायों। जागो जोवो जोत न खोवो, छल जासी संसारूं। भणी न भणबा, सुणी न सुणबा, कही न कहबा,

खड़ी न खड़बा। रे भल कृषाणी ताके करण न घातो हेलो। कलि काल जुग बर्ते जैलो, तातै नाहीं सुरां सूं मेलो।।73।

सबद-120

ओ३म् विष्णु विष्णु तू भणरे प्राणी, इस जीवन के हावैं क्षण क्षण आव घटंती जावै, मरण दिनों दिन आवै। पालटीयो घट कांय न चेत्यो, घाती रोल भनावै। गुरु मुख मुरखा चढै न पोहण, मन मुख भार उठावै। ज्यूं ज्यूं लाज दुनी की लाजै, त्यूं त्यूं दाब्यो दाबै। भलिया होय सो भली बुध आवै बुरिया बुरी कमावे।।120।।

सबद-67 (शुक्ल हंस)

ओ३म् श्री गढ़ आल मोत पुर पाटण भुय नागोरी। म्हे ऊंडे नीरे अवतार लियो। अठगी ठंगण, अदगी दागण। अगजा गंजण। ऊंनथ नाथन, अनू नवावनं काहि को खैंकाल कियों। काहीं सुरग मुरादे देसां। काही दोरे दीयूं। होम करीलो दिन ठावीलो, सहस रचीलो। छापर नीबी दूणपुरूं। गांम सुन्दरियो, छीलै बलदीयो। छन्दे मन्दे बालदीयो। अजम्हे होता नागोर वाड़ै, रैण थंमै गढ़ गागरणो। कुं कुं कंचन, सोरठ, मरहठ। तिलंग दीप गढ़ गागरणो। गढ़ दिल्ली कंचन अर दूणायर। फिर फिर दुनिया परखै लियों। थटै भवणिया अरु गुजरात। आछो जाई सवा लाख, मालवे परवत मांडू मांही ज्ञान कथूं। खुरासाण, गढ़ लंका भीतर गूगल खेऊं पैरठयों। इडर कोट, उजैणी नगरी। काहिदा सिंधपुरी विश्राम लीयों। कांय रे सायरा गाजै बाजै, घुरै घुर हरै करै इवाणी आप बलूं। किहिं गुण सायरा मीठा होता। किंहिं अवगुण हुओ खार खरूं। जद बासग नेतो मेर मथाणी। समंद बिरोल्यो ढोयरणूं। रेणायर डोहण पाणी पोहण। असुरां बेधी करण छलूं। दह शिर ने जद वाचा दीन्हीं। तद म्हे मेल्हीं अनन्त छलूं। दश शिर का दश मस्तक छेदा। ताणूं बाणूं लडूं कुलूं। सोखा बाणूं एक बखाणूं। जाका बहु परवाणूं। निश्चय राखी तास बलूं। राय विष्णु से बाद न कीजै। कांय बधारो दैत्य कुलूं।

म्हे पण म्हेई थेपण थेई। सा पुरुषां की लच्छ कुलूं। गाजै गुड़कै से क्यूं बीहै। जे झल जांकी सहस फणूं। मेरे मांय न बाप न बहण न भाई। साख न सैण न लोक जणो। बैकुण्ठे विश्वास बिलम्बण। पार गिरांये मात खिणूं। विष्णु विष्णु तू भण रे प्राणी। विष्णु भणन्ता अनन्त गुणूं। सहसे नावै, सहसे ठावें। सहसे गावें, गाजे बाजे, हीरे नीरे। गगन गहीरे। चवदा भवणे। तिहूं तृलोके, जम्बू दीपे। सप्त पाताले। अई अमाणो, तत्त्व समाणो, गुरु फुरमाणें। बहु परवाणों। अईया उईयां निरजत सिरजत। नान्हीं मोटी जीया जूंणी। एती सास फुरन्ते सारूं। कृष्णी माया घण बरसंता। म्हे अगिणि गिणूं फुहांरूं। कुण जाणै म्हे देव कुदेवो। कुण जाणै म्हे अलख अभेवो। कुण जाणै म्हे सुर नर देवो। कुण जाणै म्हारा पहला भेवूं। कुण जाणै म्हे ज्ञानी कै ध्यानी। कुण जाणै म्हे केवल ज्ञानी। कुण जाणै म्हे ब्रह्मज्ञानी। कुण जाणै म्हे ब्रह्मचारी। कुण जाणै म्हे अल्प अहारी। कुण जाणै म्हे पुरुष कै नारी। कुण जाणै म्हे बाद विवादी। कुण जाणै म्हे लुब्ध सवादी। कुण जाणै म्हे जोगी कै भोगी। कुण जाणै म्हे आप संयोगी। कुण जाणै म्हे भावत भोगी। कुण जाणै म्हे लील पती। कुण जाणै म्हे सूम कै दाता। कुण जाणै म्हे सती कुसती। आप ही सूमर आप ही दाता। आप कुसती आपै सती। नव दाणूं निरवंश गमाया। कैरव किया फती फती। राम रूप कर राक्षस हड़िया। बाण के आगे बनचर जुड़ियां तद म्हे राखी कमल पती। दया रूप म्हे आप बखाणां। संहार रूप म्हे आप हती। सोलह सहस्र नवरंग गोपी। भोलम भालम, टोलम टालम, छोलम छालम। सहजे राखी लो म्हे निश्चय कन्हड़ बालो आप जती। छोलबीया म्हे तपी तपेश्वर। छोलब किया फती फती। राखण मतां तो पड़दे राखां। ज्यूं दाहे पान बणास पती ।।67।।

अथ कलश पूजा

ओ३म् समरथ कथा सुणो सब कोई। ताते पृथ्वी उत्पति होई। अकलरूप मनसा उपराजी। तामा पांचतत्व होय राजी।।1। आकाश वायु तेज जल धरणी। तामा सकल सृष्टि की करणी।।2।। ता समरथ का सुणो विचार। सप्तद्वीप नवखण्ड प्रमाण।।3।। पांचतत्व मिल

अण्ड उपायों। विगस्यो अण्ड धरणि ठहरायों।।4।। अण्ड मध्ये जल उपजायों। जलमां विष्णु रूप ऊपनों। ता विष्णु को नाभ कमल विगसानों।तामा ब्रह्मा बीज ठहरायों।।5।। ता ब्रह्मा की उत्पति होई। भानै घड़े सवारै सोई।।6।। कुलाल कर्म करत है सोई। पृथ्वी ले पाके तक होई।।7।। आदि कुम्भ जहां उत्पन्नों। सदा कुम्भ प्रवर्त्तते।।8।। कुम्भ की पूजा जे नर करते। तेजकाया भौखण्डते।।9।। अलील रूप निरंजनों। जाके न थे माता न थे पिता न थे कुटुम्ब सहोदरम्। जे करै ताकी सेवा ताको पाप दोष क्षयो जायते।।10।। आदि कुम्भ कमल की घड़ी। अनादि पुरुष ले आगे धरी।।11।। बैठा ब्रह्मा बैठा इन्द्र। बैठा सकल रवि अरु चन्द्र।।12।। बैठा ईश्वर दो कर जोड़! बैठा सुर तेतीसां क्रोड़।।13।। बैठी गंगा यमुना सरस्वती। थरपना थापी बाले निरंजनगोरख जती।।14।। सत्रह लाख अठाईस हजार सतयुग प्रमाण। सतयुग के पहरे में सुवर्ण को घाट सुवर्ण को पाट। सुवर्ण को कलश। सुवर्ण को टको। पांच क्रोड़या के मुखी गुरु श्री प्रहलादजी महाराज कलश थाप्यो। वै कलश जो धर्म हुआ सो इस कलश हुइयो। श्री सिद्धेश्वर महाराज भला करियो। ओ३म् विष्णो तत्सत् ब्रह्मणे नमः।।15।। बारह लाख छीयानवे हजार त्रेतायुग प्रमाण। त्रेतायुग के पहरे में रूपे को घाट। रूपे को पाट। रूपे को कलश। सुवर्ण को टको। सात क्रोड़या के मुखी राजा हरिश्चन्द्र तारादे रोहितास कलश थाप्यो। वै कलश जो धर्म हुआ सो इस कलश हुइयों। श्री सिद्धेश्वर महाराज भला करियो। ओ३म् विष्णो तत्सत् ब्रह्मणे नमः।।16।। आठ लाख चौसठ हजार द्वापर युग प्रमाण। द्वापर के पहरे में तांबे को घाट। तांबे को पाट। तांबे को कलश। रूपे को टको। नव क्रोड़या के मुखी राजा युधिष्ठिर कुन्ती माता द्रोपदी पांच पाण्डव मिल कलश थाप्यो। वै कलश जो धर्म हुआ सो इस कलश हुइयों। श्री सिद्धेश्वर महाराज भला करियो। ओ३म् विष्णो तत्सत ब्रह्मणे नमः।।17।। चार लाख बतीस हजार। कलियुग प्रमाण कलियुग के पहरे में माटी को घाट। माटी को पाट। माटी को कलश। तांबे को टको। अनन्त क्रोड़्या के मुखी श्री जम्भेश्वर भगवान् कलश थाप्यो। वै कलश जो धर्म हुआ सो इस कलश हुइयो। श्री सिद्धेश्वर महाराज भला करियो। ओ३म् विष्णो तत्सत् ब्रह्मणे नमः।।18।।

पाहल मन्त्र

ओ३म् नमो स्वामी शुभकरतार। निर्तार, भवतार, धर्मधार पूर्व एक ओंकार।।1।। साधूनां दर्शणम् पुण्यम् सन्मुखे पाप नाशणम्।।2।। जन्म फिरंता को मिले। सन्तोषी शुचियार। अपणोस्वार्थ ना करै। पर पिण्डपोषणहार।।3।। पर पिण्डपोषण हार जीवत मरे पावै मोक्ष ही द्वार ।।4।। एहस पाहल भाईयों साधे लिवी विचार। एहस पाहल भाइयों थूले मेल्ही हार।।5।। एहस पाहल भाईयों ऋषि सिद्धों के काज। एहस पाहल भाइयों। ऊधरियो प्रहलाद।।6।। तेतीसकोटि देवांकुली। लाधो पाहल बन्द। एहस पाहल भाईयों। ऊधरियो हरिश्चन्द।।7।। पाहल लीन्हीं कुन्ती माता। होती करणी सार। साधु एहा भेंटिया। मिल्यो मोक्ष को द्वार।।8।। आओ पांचों पांडवो। गुरु की पाहल ल्योह। पाहल सार न जाणही तिस पाहल मत द्यो।।9।। पाहल गति गंगा तणी। जेकर जाणे कोय। पाप शरीरां झड़ पड़ै पुण्य बहुत सा होय।।10।। नेम तलाई नेम जल। नेम के जीमे पाहल। कायम राजा आइयो। बैठो पांव पखाल।।11।। ऋषि थाप्या गति उधरै। देता दिये पाहल। वन वन चन्दन न अगरण। सरसर कमल न फूल।।12।। एका एकी होय जपों ज्यों भागे भ्रमभूल। अड़सठ तीर्थ काँय फिरो। न इण पाहल समतूल ।।13।। गोवल गोवल कोको धवल। सब संता दातार। विष्णु नाम सदा जीम। पाहल एह विचार। सद्गुरु बोले भाइयों। संत सिद्ध शुचियार।।।14।। मत्स्य की पाहल। कुर्म की पाहल। वाराह की पाहल। नृसिंह की पाहल। बावन की पाहल। परशुराम की पाहल। राम लक्ष्मण की पाहल। कृष्ण की पाहल। बुद्ध की पाहल। निकलंक की पाहल। सर्वाधार सर्वशक्तिमान् सर्वेश्वर मेरी जम्भेश्वर भगवान् की पाहल।।15।।

आदि सृष्टि – दशावतार

आदु–अनादु सष्टेन भवणे, भवणे न भव खण्डे।
जीवे न काले, कासले न कजले, कजले न गगने ।।
प्रथम आद, आदतै अछैद, अछैद तें अधिकम्प।
अधिकम्प ते वाय, वाय ते तेज, तेज ते जल ।।

जल ते कंवल, कंवल ते इण्ड, इण्ड ते पिण्ड ।
पिण्ड ते खाखट, खाखट ते खटथम्भ।।
खटथम्भ ते सृष्टि, सृष्टि ते जोत।

1. जोत ते पहला अवतार श्री विष्णुजी हुवा मछरूपी।
मछ की माता तो शंखावती, पिता तो पुरब ऋषि।
गुरु तो मानधाता ऋषेश्वर, क्षेत्र तो द्वारकापुर पाटण।
निरदलन्ते, शंखासुर दाणुं ले उधरन्ते।।1।।
चार वेद षट्शास्त्र, अठारे पुराण नव व्याकरण।
संध्या तर्पण गीता गायन्त्री, षट्करम सुरजमन्त्र।।
सात वार सताईस नक्षत्र, बारह राशि सोले कला
पन्दरा तिथि नव ग्रह, चौईस मन्त्र जुग-जुग नारायणजी अवतरे।
ऋषि थापे दाणु संघारे, हरि अवतार सुणो चितलाय।
बधे धर्म पाप क्षय जायते।।

2. ''द्वितीय'' अवतार श्री विष्णुजी कच्छरूपी अवतरे
कच्छ की माता तो पदमावती, पिता लोम ऋषि।
गुरु सेजानन्द ऋषेश्वर, क्षेत्र मानसरोवर ।
पुर पाटण निरदलन्ते, मधु किचक दाणु ले उधरन्ते।
हरि अवतार सुणो चितलाय, बधे धर्म पाप क्षय जायते।।2।।
3. ''तृतीय'' अवतार श्री विष्णुजी वराह रूपी अवतरे
वराह की माता तो लीलावती, पिता तो बंसराज।
गुरु हरवंश ऋषेश्वर, क्षेत्र इन्द्रपुर पाटण।
निरदलन्ते मुरदाणु ले उधरन्ते, हरि अवतार सुणो चितलाय।
बधे धर्म पाप क्षय जायते।।3।।

4. ''चतुर्थे'' अवतार श्री विष्णुजी नरसिंह रूपी अवतरे
नरसिंह की माता तो चन्द्रावती, पिता तो हरिशचन्द्र।
गुरु इम्रतमुनि ऋषेश्वर, क्षेत्र मूलचक मुलतानपुर पाटण।
निरदलन्तेहिरणाकुशदाणुलेउधरन्ते, हरिअवतारसुणोचितलाय।
बधे धर्म पाप क्षय जायते।।4।।

5. ''पंचमे'' अवतार श्री विष्णु बावन रूपी अवतरे
बावन की माता तो अदिती, पिता तो कश्यप जी।
गुरु अगस्त्य मुनि ऋषेश्वर, क्षेत्र असबलपुर पाटण।
वसुधा ले बलिराजा, हरि अवतार सुणो चितलाय।
बधे धर्म पाप क्षय जायते।।5।।

6. ''षष्ठमे'' अवतार श्री विष्णु परसुराम रूपी अवतरे
परसुराम की माता तो रेणका, पिता तो जमदग्नि।
गुरु अगस्त्य मुनि ऋषेश्वर, क्षेत्र कोलापुर पाटण
निरदलन्ते संहस्रार्जन दाणु ले उधरन्ते
हरि अवतार सुणो चितलाय। बधे धर्म पाप क्षय जायते ॥6॥

7. ''सप्तमे'' अवतार श्री विष्णुजी रामचन्द्र रूपी अवतरे।
रामचन्द्र की माता तो कौशल्या, पिता तो दशरथजी।
गुरु तो वशिष्टमुनि ऋषेश्वर, क्षेत्र अजोध्यापुर पाटण।
निरदलन्ते दसशीश बीस भुजा रावण दाणु ले उधरन्ते।
हरि अवतार सुणो चितलाय, बधे धर्म पाप क्षय जायते ॥7॥

8. ''अष्टमे'' अवतार श्री विष्णुजी कृष्ण रूपी अवतरे।
कृष्ण की माता तो देवकी, पिता तो वसुदेव जी।
गुरु दुर्वासा मुनि ऋषेश्वर, क्षेत्र मथुरापुर पाटण।
कंसासुर दाणु ले उधरन्ते, हरि अवतार सुणो चितलाय।
बधे धर्म पाप क्षय जायते।।8।।

9. ''नवमें'' अवतार श्री विष्णु जी बुद्ध रूपी अवतरे
बुध की माता तो करूणावती, पिता तो गंग ऋषिश्वर।
गुरु तो काच्छब ऋषि, क्षेत्र सोतमपुर पाटण।
गयासुर दाणु ले उधरन्ते, हरि अवतार सुणो चितलाय।
बधे धर्म पाप क्षय जायते।।9।।

10. ''दशमें'' अवतार श्री विष्णुजी हुवेंगे निकलंक रूपी माघ मास शुक्ल पक्षे, चतुरदशे अवतार होवेगे। सेतराग - सेतबाग - सेतघोड़ा - सेत पलाण। सेत मेघाम्डबर, सेत शिर छत्र, अठारे हाथ को खड्ग। बतीस हाथ को मरद, निकलंक की माता तो कामना। पिता धनकधारी, गुरु सहजरूपी, आप क्षेत्र तो सम्भरा नगरी पुर पाटण। निरदलन्ते कालिंगो दाणु ले उधरन्ते। हरि अवतार सुणो चितलाय, बधे धर्म पाप क्षय जायते।।10।।

विष्णु स्तुति

ज्ञाने तूं ध्याने तूं शीले तूं, शब्दे तूं आचारे तूं। विचारे तूं, गंगन गहीरे तूं, चवदा भवणे तूं।। तिहूं तृलोके तूं, नाने वेदे तूं, जम्बूदीपे तूं ।। सप्त पाताले तूं, गाजें तू, बाजे तूं, दामोदर तूं कृष्ण ! बाहर तूं, भीतर तूं, सर्व निरन्तर तूं। आदि तूं, जुगादि तू, निरंजन निराकार ज्योति सरूपी तूं ।। धणी हुवे जिसी धणियाप करी, बिरछा हुवे जिसी छायाकरी। पुरुष हुवै जिसी मेहरकरी, आई बलाय दफें करी ।। बुरे बाळियो बुरे चितियों, जिसके चक्रमारी। त्रिलोकी का नाथ, भलो हुवै सो करी।। इति।।

साखोचार

पहलो मंगल मोतियाँ, ब्रह्मा पुरयो चोक।
ईश्वर परणी गंवरजां, पंचे कियो पंचोल ।।
तारा अम्बर छाविया, धर छाई बनराय।
अलख निरंजन के लिखे, सकल उपावन हार।।
पहले फेरे श्री रामचन्द्रजी, दूजे मंगलाचार।
अर्जन परणी द्रोपदा, तीजे मंगला चार ।।

धनुष चढायों पाण्डवां, कृष्ण लियो अवतार।
चौथो फेरो कलु कालको, राजा भोज पंवार ।।
वर पायो भाणावती, तूठो कृष्ण मुरार।
बैल थका तुरी टुबला, भला जी आडा चन्द ।।
कन्या तणों वर आवियो, जैसे पूनम को चन्द।
हे मृगनयनी सुन्दरी, तो सुख देनी नार ।।
तो कारण वर आवियों, मांडे करो वसार।
मांडो माणक जड़ो, हीरा रतन जड़ाय ।।
हीरा लगा लाखवी, फेर लगा लखचार।
तूरी पीलाणों नवलखों, सेंवर बाधो भार।।
इन सेवरे शिर छत्रधरो, धर्म कन्या परणाय।
एकादशी व्रत पालता, द्वादशी व्रत मान ।।
चांद सूरज का सेवरा, कृष्ण लियो अवतार।
चार जुगा के चारों मंगल, चारों वेद पढन्त ।।
सीता परणी श्री रामचन्द्रजी, सूवा केल करन्त।

श्री कृष्णाजी के विवाह का साखोचार

आद गुरु गणेश कुं, निश दिन नाऊँ शीश।
शिव शंकर सिवरूं शारदा, जगदाता जगदीश ।।
गिरधारी चंवरी चढाणी, नन्द महेर के कान।
मोर मुकुट की लटक पर, कुण्डल झलकै कान।।
पीत पीताम्बर राजवी, गल बैजन्ती माल।
रतन जड़त सिंघासन, जहां बैठे श्री गोपाल ।।
छत्र फिरावै इन्द्रजी, ब्रह्मा ढोले बाव।
सुरनर मुनी जन देवता, निरखण आया चाव ।।
सनकादिक जै-जै करै, शंख नाद की घोर।
सुरनर मुनिजन देवता, स्तुति करै करजोर ।।
जहाँ ब्रह्मा वेदी रची, सब ऋषि बैठे आय ।

घर-घर आगे चतुरमुनि, पढ़े वेद धुन लाय ।।
ऋषि वशिष्ट और कपिलमुनि, दुरवासा और व्यास।
पारासर की पुत्री, निश-दिन बनों निवास ।।
मृगनैनी दे सींठणा, वर का रंग अपार।
रतन जड़त की लालड़ी, मोतीयन की बिसवार ।।
दुल्हन बैठी राधका, वर श्री नन्दकुमार।
रतन जड़त का खम्भ है, धुजा फरूकै बार।।
घर घर मंगल होत है, राजा नगर मन्झार।
मंगल गावै कामणी, कर सोले सिणगार ।।
बरसाने की भावनी, निकट जो बैठी आय।
हंस गवनी मृग लोचनी, रूप न वरण्यों जाय ।।
मुरली धुन मंगल करण, आनन्द सकल भरी।
दर्शन देख श्री कृष्ण का, सुध बुध सब बिसरी ।।
नन्दराय परणाय कै, सिंघासन बैठे आय।
शशि वदनि छन्द कहे, छन्द कहों बृजराय ।।
छन्द कहावै कामणी, नगर चतुर सुजाण।
बोल बोल प्रबल गई, बार-बार दे दान ।।
त्रेता रावण मारयो, द्वापर मारयो कंस।
भगत हेत हरि अवतरया, श्री वसुदेव के वंश ।।
हीरा मोती रतन है, दीजो हरि के भेंट।
या माया मन मोवनी, जहां हरि बन्धी फेंट ।।
धोली काली काजली, दान देवे वृषभान।
घूरै निसान प्रीत पीताम्बर जाचक दीजौ दान ।।
सबसूं बोले अमृत वाणी, दान दियौ बहुरीत।
नन्दराय परणाय कै, घर कूं चाल्या जीत ।।
कर जोड़ वृषभान कहै, मैं चरणों को दास।
धरम कन्या हम तम कू देई, मो राखो चरण निवास ।।
छिज मथुरा की विनती, सुणियों जगतपति ईश।
चरण कमल मोहि राखियों, यही बड़ी बकशीश ।।

असतो वचन स्वाहा.....

श्री रामचन्द्रजी के विवाह का साखोचार

प्रथम जो सुमरू शारदा, ध्याऊ देव गणेश।
कोटि विघ्न टाले सदा, सुख दायक जुं महेश।।1।।
रामचन्द्र के ब्याव को, वरणु साखोचार।
नाम लेत रघुनाथ को, उबरे सब नरनार।।2।।
एक समय दशरथ गृहे, विश्वामित्र मुनीश।
राम लक्ष्मण संग लेन को, आये विश्वावीश।।3।।
शीश नाय कर जोड़ के, बोले दशरथ राय।
जो तुम मांगों ब्रह्म ऋषि, सो देवू चितलाय।।4।।
तब ही विश्वामित्रजी, रामचन्द्र को लीन्ह।
दशरथ सुत संग लेय कर, यज्ञ सम्पूर्ण कीन्ह।।5।।
दिन व्यतीत बहुते भये, संग लीन्ह रघुनाथ।
बहुरी गये मिथिलापुरी, दोऊ भाई साथ ।।6।।
मिथिलापुरी को देखि के, चकित भये रघुवीर।
ऐसी अवधपुरी नहीं, जड़े स्वर्ण अरू हीर।।7।।
जाय वास महला कियो, कहे जूं सब नर नार।
वर लायक श्रीरामजी, सीताजी के अनुसार।।8।।
रच्यो स्वयंवर जनकजी, कठिन धनुष प्रणपाल।
तोड़त है सब भूप मिल, मुसके नहीं कछु हाल।।9।।
जब बोले जनकजी, क्षत्री अंश न कोय।
वचन सुनत ही जनक के, लक्ष्मण क्रोधित होय।।10।।
कहे लक्ष्मण को रामजी, मन में राखो धीर।
कठिन धनुष को लेय के, तब तोड़यो रघुवीर।।11।।
धनुष तोड़ टुकड़ा किया, वर माला तब लीन्ह।
असुरन को श्री रामजी, सर्व तेज हत कीन्ह।।12।।
जनक राज हर्षयों घणों, लीन्हां दूत बुलाय।
जब ही भेजे अवधपुरी, तब ही पहुंचे जाय।।13।।
दे दशरथ कुं पत्रिका, बोले शीश नवाय।
रामचन्द्र के ब्याव की, आजो जान बनाय।।14।।

आनन्द ही भये नगर में, घर-घर मंगलाचार।
दूतों को राजी किया, दे दे मोहर जुहार।।15।।
अवधपुरी संग लेय के, बाजा बहुत बजाय।
राज भरत अरू शत्रुघ्न, चढ़े गणेश मनाय।।16।।
जब पहुंचे मिथिलापुरी, ढोल मृदंग घुराय।
देखण आय नगर सब, सब देखे सिरनाय।।17।।
दुनिया आपस में कहे, देखो नैन लगाय।
जैसे लक्ष्मण राम है, तैसे है दोऊ भाय।।18।।
जब आये श्रीरामजी, पिता पास सन्मुख।
चारू भाई मिलत ही, हृदय उमग्यो सुख।।19।।
जामो पहरयो नौ लखो, रामचन्द्र जग माही।
रत्न जड़ित सिर सेहरो, कुण्डल कानन माही।।20।।
शीश मुकुट अरू छत्र है, शोभा कही न जाय।
ऐसी छवि श्री राम की, तीन लोक में नाय।।21।।
यश गावत सब गन्धर्व, देव बन्धु सब साथ।
तब ढुके श्रीरामजी, तीन लोक के नाथ।।22।।
सब मिल सखि सहेलिया, मंगल बात विचार।
कुकुंम तिलक चढाय के, करे आरतो नार।।23।।
चौक पुरायो मोतियां, रत्न जड़ाऊं थम्भ।
मोतियन के अक्षत दिये, शुभ दायक घर कुम्भ।।24।।
कंचन चौकी बैठिया, सीता राम समान।
सतानन्द पूजा करै, विधिस्यू वेद बखान।।25।।
विश्वामित्र वशिष्ठजी, होम करै शुभ कार।
शुभ नारी दे शिठणां, गावै मंगलाचार।।26।।
हथलेवो जोड़यो जब, कीन्हा मुक्ता दान।
दई दक्षिणा द्विजन कूं, बहुत किया सन्मान।।27।।
फैरा ले श्रीराम जी, बाजे मंगल भेर।
रणसिंगा अरू दुन्दुभी, गरजे जिम घनघोर।।28।।
जनक सुता सीता भई, अवधपुरी रघुनाथ।
मिथिलापुरी में ब्याहविया, चारू भाई साथ।।29।।

हथलेवों छुटयो जब, रथ दीन्हा सिणगार।
कोटिक दीनी दासियां, सीता जी अनुसार।।30।।
सर्व रीत कुल की करी, शोभा कहियन जाय।
द्विज बन्दी जन सर्व ही, भयो अजाचिक आय।।31।।
करे विनती जनक जी, दशरथ आगे आय।
हमसे नी कुछ टहलवा, बनी नही महाराज।।32।।
तब बोले दशरथ, धन्य- धन्य महाराय।
मन वांछित सब ही लीयो, पास तुम्हारे आय।।33।।
पुरी अयोध्या आवियां, घर-घर मंगलाचार।
वन्दी जन सब देख के, जै-जै, करै उचार।।34।।
शिव सनकादिक सर्व ही, शेष न पावै पार।
न्यूल बनाय कही हम, सियाराम की भार।।35।।
नगर फतेपुर के बिखे, पूर्ण साखोचार।
मार्गशीर्ष शुक्ला अष्टमी, पुनः रवि सुत है बार।।36।।
ऐतिक मेरी उक्त है, साखा कहि बनाय।
ब्रजानन्द सुत की विनती, सुन लीजो रघुनाथ।।37।।
(इति साखोचार पूर्ण)

चौजुगी

सतजुगै मझै ऊपनी पिरथमी आकाश लो मण्डपों।
धरती तो बरखमी बसत तो पीलवी धम्भा तो सोनवा ।।
बरो तो ईश्वरो कन्या तो पारबती बिरामणो तो बिरमाजी।
वेद तो रघुवेद भणते-गुणते हमो-तमो स्वामी जी।
पुण्य वाचा-महा विष्णु फरमाया ब्रह्मा ने, ब्रह्मा फरमाया शिव ने,
शिव फरमाया सृष्टि ने, सत तू, सहाय तू, ओ वर आ कन्या
सही है, पढ़ बोलो सत स्वाहा ।।1।।

त्रेता जुगे मझै अपनी पिरथमी, आकाश लो मण्डपो ।
धरती तो बरखमी, बसन्त तो पीलवी।
थम्भा तो रूपवां, बरो तो रामचन्द्र जी।।
कन्या तो सीता सतवती, विरामणो तो वशिष्ठ मुनि।

वेद यजुर्वेद भणते-गुणते, हमो-तमो स्वामी जी पुण्यवाचा। महा विष्णु फरमाया ब्रह्मा ने, ब्रह्मा फरमाया शिव ने। शिव फरमाया सृष्टि ने, सत तू सहाय तू ओ वर आ कन्या। सही है पढ़ बोलो सत सहाय।।2।।

द्वापर जुगे मझै ऊपनी पिरथमी, आकाश लो मण्डपो। धरती तो बरखमी वसन्त तो पीलवी, थम्भा तो ताम्बॉ। वरो तो कृष्ण देव, कन्या तो रूकमणी, बिरामणों तो दुर्वासा ऋषि। वेद तो सामवेद, भणते-गुणते, हमो-तमो स्वामी जी पुण्य वाचा। महा विष्णु फरमाया ब्रह्मा ने, ब्रह्मा फरमाया शिव ने। शिव फरमाया सृष्टि ने, सत तू सहाय तू ओ वर आ कन्या। सही है, पढ़ बोलो सत सहाय।।3।।

कलजुगे मझै ऊपनी पिरथमी आकाश लो मण्डपों। धरती तो बरखमी, बसंत तो पीलवी, थम्भा तो तेणवा। वरो तो है निकलंकी, कन्या तो पदमावती बिरामणों तो फरसराम जी ऋषिश्वर, वेद तो अथर्ववेद, भणते-गुणते। हमो-तमो स्वामी जी पुण्य वाचा, महा विष्णु फरमाया ब्रह्मा ने। ब्रह्मा फरमाया शिव ने, शिव फरमाया सृष्टि ने, सत तू-सहाय तू-ओ वर आ कन्या सही है। पढ़ बोलो सत स्वाहा ।।4।।

(आधा विवाह सम्पन्न)

पीढ़ी पलटण का मन्त्र

कन्या सपन्ती का दक्षिणो, वामा गच्छति भवेत्भार्या।
तेन भविष्यति विष्णु, इन्द्रा वेधात्री भवानि च।।
सर्व देव मुनि जायाद्या, यस्या सनब बभूवते ।
सा फल दायाती यथा फल भावै, लाभ मंगला दातित्वां।।
भौम क्षेत्र देवा सर्वे, बड़वाद्या नक्षत्रा च ।
सन्मुखे पूर्व युवां भवतु, एतेषु फल दायका।।

गोत्राचार

ओ३म् सन्मुखे सन्मुखे जदूवासरुपम्। पूज्यत्रम् सामनिधिम्। गुण निधिम्। आकाश पितरम्। सतारामम्। पंचम पाताल मुखम्। वरुणते शिवमुखम्।।1।। श्री पार्वत्युवाच। कस्मिन् मासे, कस्मिन् पक्षे, कस्मिन् तिथौ, कस्मिन् वासरे, कस्मिन् नक्षत्रे, कस्मिन् लग्ने उत्पन्नेऽसौ।।2।। श्री महादेव उवाच। आषाढ मासे, कृष्ण पक्षे, अर्द्ध रात्रौ, मीन लग्ने, चतुर्दश्यां, शनिवासरे, रोहिणी नक्षत्रे, ऊर्ध्वमुखे, दृष्टपाताले, अगोचर नामाग्निः।।3।। श्री पार्वत्युवाच। कातस्य माता, क्वतस्य पिता, क्वतस्य गौत्रः, कतिजिह्वा प्रकाशितः।।4।। श्री महादेव उवाच। अरणस माता, वरुणष्पिता, शाण्डिल्य गौत्रे, वनस्पति पुत्रम्, पावकनामकम् वसुन्धरम्।।5।। चत्वारिश्रृंङ्गा त्रयो अस्य पादा, द्वे शीर्षे, सप्त हस्तासो अस्य। त्रिधावद्धो वृषभोरोरवीति महादेवोमर्त्यां आविवेश।।6।। निखिल ब्रह्माण्डमुदरे यस्य द्वादश लोचनम् सप्त जिह्वा।।7।। काली कराली च मनोजवा च सुलोहिताया च सुधुम्र वर्णा। स्फुलिङ्गिनी विश्वरूपी च देवी लेलायमाना इति सप्त जिह्वा।।8।। प्रथमस्तु घृतम्। द्वितीये यवम्। तृतीये तिलम्। चतुर्थे दधि। पंचमे क्षीरम्। षष्ठे श्रीखण्डम्। सप्तमे मिष्टान्नम्। एतानि सप्त अग्नेर्भोजनानि।।9।। एतैः सप्त जिह्वा प्रकाश्यन्ते, ऊर्ध्वमुखा धोमुखा भिमुखैः सहाय्यंकरोति। घृतमिष्टान्नदि पदार्थाः महाविष्णु मुखे प्रविशन्ति। सर्वे देवा ब्रह्मा विष्णु महेश्वरादयस्तृप्यन्ति।।10।।

वेद मन्त्र

अग्निमीले पुरोहितम् यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।।11।। अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनै रुतसदेवां एहवक्षति।।12।। अग्निनारयि मश्नवत्पोषमेव दिवे दिवे। यश संवीरवत्तमम्।।13।।

अग्नेयं यज्ञ मध्वरं विश्वतः परिभूरसि। सइद्देवेषु गच्छति।।14।।
अग्निर्होता- कविक्रतुः सत्यश्चित्रश्रयस्तमः देवोदेवेभिरागमत् ।।15।।
यदंगदाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि। त्वेत्तत्सत्यमंगिरः ।।16।।
उपत्वाग्ने दिवे दिवे दोषावस्तर्धियावयम्। नमो भरंत एमसि।।17।।
राजतमध्वराणां गोपामृतस्यदीदिविम्। वर्धमानं स्वेदमे।।18।।
सनः पितेव सूनवे अग्नेसुपायनोभव। सचस्वानः स्वस्तये।।19।।
अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्य- स्मज्जुहुराणमेनो भुयिष्ठा ते नम उक्तिं विधेम।।20।।

अथ मंगलाष्टक

विभूति श्री विष्णु की, व्याप रही सब ठोड़।
विघ्न हरण मंगल करण, पत्र वरणु कर जोड़।।
श्री गुरूवन पति विरसती, देवन पति गोविन्द।
देवतान पति ब्रह्मा, साधन पति शंकर।।1।।
कवियन पति शेषनाग,गुणियन पति गणेश।
बुधियन पति विनायक, सुधड़न पति सरस्वती।।2।।
बीजन पति पाणी, तेजन पति बासन्दर।
प्रानन पति प्रेम, ऊंचन पति आकाश।।3।।
गरबन पति पिरथवी, बारन पति सूरज।
पक्षन पति चन्द्रमा, मासन पति भादवा।।4।।
औषधीन पति अन्न, तिणन पति दरभ।
वनास पतियन पति पीपल, जुगन पति सतजुग।।5।।
लोकन पति सतलोक, सतियन पति सीता और हरिशचन्द्र।
सन्तोषियन पति अम्बरीष, दातारन पति बलि राजा।।6।।
जाचकन पति बावन, चरणामृतन पति गंगा।
उत्तमन पति तुलसी, पतिव्रतान पति लक्ष्मी।।7।।
नदीयन पति जमना, विद्यान पति वेद।
सुधन पति गायत्री, धर्मन पति जीवदया।।8।।

सुन्दरीयन पति जीव, जोधान पति कामदेव।
मरजादन पति गिरमेर, महमानन पति समुन्दर।।9।।
रतनन पति अमृत, बरजन पति शंख।
वैद्यन पति धनंतर, धनुषन पति कुन्तबान।।10।।
चकरन पति सुदर्शन, भगतन पति प्रहलाद।
भूपन पति इन्द्र, पुरियन पति अजोध्यापुरी।।11।।
क्षेत्रन पति गया, विरधन पति कुरुक्षेत्र।
अरणन पति दण्डकारण, ग्रामन पति संबल।।12।।
सरोवरन पति मानसरोवर, मुनियन पति कपिल मुनि।
सिद्धन पति गोरख, जोगेसरन पति भरथरी।।13।।
भण्डारीयन पति कुमेर, वर्षान पति मेघमाला
समुद्रन पति रतनागर, दीपन पति जम्बूदीप।।14।।
खण्डन पति भरत खण्ड, पसुवन पति कामधेनु।
पक्षीयन पति गरूड़, जतियन पति कत्रसाम।।15।।
कपियन पति हड़मान, रीछन पति जामवन्त।
लगुरन पति अंगद, देवन पति श्री रामचन्द्र।।16।।
कुलन पति भागीरथ, सेवगान पति लक्ष्मन।
भाईयन पति भरत, तेजन पति परसराम।।17।।
पुत्रन पति श्रवण, सुधान पति मथुरा।
पितान पति वसुदेव, मातान पति देवकी।।18।।
बड़ भागियन पति नन्द जसोदा, विदेहन पति जनक।
शीलन पति गगेव, छत्रियन पति करण।।19।।
पुरीयन पति हथनापुर, वाचान पति युधिष्ठिर।
अभिमानियन पति दुर्योधन, वीरन पति वीर विक्रमाजीत ॥20॥
धनुष धारियन पति अर्जन, मलन पति भीमसेन।
पण्डितन पति सहदेव, रूपन पति नकुल।।21।।
कुंवारिन पति कुन्ता, देवियन पति द्रोपदी।
दासन पति विदुर, पुराणन पति भागवत।।22।।
पवित्रन पति दान, सुपात्रन पति अतिथिसेवा।
वर्णनन पति ब्राह्मण, वैश्यान पति तुलाधार।।23।।

शुद्रन पति चित्रगुप्त, परवारन शरीर।
व्रतन पति एकादशी, तिथन पति द्वादशी।।24।।
लीलान पति श्रीकृष्ण, नाथन पति श्री जगन्नाथ।
प्रेमन पति गोपका, सकल पति महाविष्णु।।25।।

दोहा

पत अनन्त को गिण सकै, मंगल सुणियो साध ।
कर जोड़े केसो जपै, मुचै सकल अपराध।।1।।
शीश निवाऊं सर्व पतन कूं, कर विनती कर जोड़।
विघ्न हरण मंगल करण, दुख मिटै जुं क्रोड़।।2।।
शिव शक्ति गणपति अरच, विघ्न मिटावण हार।
सभा सिध परवार में, दोय कुल मंगलाचार।।3।।
वास परम लाजै सझै, चंदन अगर कपूर।
पांच लाडू शिवा सूं थम्भ, शिवत बोल हजूर।।4।।
चन्दन कपूर शीतल निवै, अगर निवै जू बहुत।
अनड़ विनायक पूजिये, गवरी तिहारों पूत।।5।।

चौजुगी

सतजुग मां जब ईश्वर वरणो, इन्द्र बरसत अमृत झरणो।
हिमाचल घर चंवरी रचाणी, ब्रह्मा पढ़े गुरू वेदकी बाणी ।।1।।
थम्भ सरोवर कंचन वरणा, हीरा मोती कलश में धरणा।
जानी ठाडे बहुत सुरंगे, उडे गुलाल केशरी पंच रंगे ।।2।।
तेतीस क्रोड़ देवता आए, सब सखीयन मिल मंगल गाए।
जद ब्रह्माजी तिलक जु कीना, सब सखीयन कु आदर दीना ।।3।।
हेमांचल जब विनती कीनी, चरण पलोट कर कन्या दीनी।
ले शक्ति कैलाश सिधाएं, संख धुन तदूर बजाएँ।।4।।
देवता मिल अरज करीजै, सहंस गऊ पुंन मैं दीजै।
कंकण डोरा जब ही खोल्या, माया कर ईश्वर बोल्या।।5।।

ईसरजी जद उछब कीनो, थाल भर भर मोतियां को दीनो ।
चार वेद शंकर कु गावै। अनं धंन लक्ष्मी सब रस पावे।।6।।
शिव शक्ति अवचल सदा ब्रह्मा कहे तहे वाच ।
अंक विधाता लिख दीया, पढ बोल्या शिव साच।।7।।

---000---

त्रेताजुग की कह सुणाऊ, अजोध्यापुर की महमा गांऊ।
रूगनाथ सिरोमणि लिछमण भाई,इन बन्धु की प्रीत सवाई।।1।।
अंगीकार अपणा कर लेणा, भगवत बोले इमरत बेणा।
मेरा बन्धु लिछमण ऐसा, कल्प वृक्ष चिन्तामण जैसा।।2।।
दशरथ जी के कंवर सरूपा, सुरत देख मोहित भण भूपा।
रूगनाथ को किणीयन पायो पार, देवता मुनि जुग सकल सरायो।।3।।
अम्बर के सिर जैसी काना बेनी, जटा सवारन शेष की बेनी।
मोतीयन जल नैत्र विराजै, अधरन की सुन्दर छवि छाजै।।4।।
दांत दाड़म के बीज सम करणा, अधर लाल हिंगलु जिम बरणा।
कैल के थम्भ धी रावण के हंसा, ओढण पीताम्बर हाथ धनसा।।5।।
जनकपुरी में स्वयंवर कीनो, सब भूपन को तेड़ो दीनो।
बीस भुजा के राजा आए, जनक सभा में आण बैठाए।।6।।
पांच फूलो की माला कीनी, जनक सूता के हाथ में दीनी।
सभा शिरोमणि सीता जोवे, भगवत उभा प्रसन्न मन मोवे।।7।।
अंगूठे सूं धनुष उठायो, जब बोले भगवत के ध्यायो।
पोप की माला सीता पधारणी, जब ते हुई जै जै बाणी।।8।।
हजार कलसा सूं सेवा करणी, उंचे सुर गावै अणछरणी।
कनक कलस में आगे कीना,प्रेम को आदर भगता ने दीना।।9।।
इन कलसो में मोती गिरवाना, तीन लोक का नाथ कहाना।
मात कौसल्या प्रेम की भीनी, मोतियां थाल भर आरती कीनी।।10।।
उछब कर आशीषका दीनी, रघुवर जुग-जुग जीना।
सेवादास कहे वाच अंक विधाता लिख दिया पढ़ बोलो हक साच।।11।।

अहो वृजदेश भारी, रहत मुरारी बरन भारी।
साम को मुथराज पूरियां,रहैत सरियां।।
दर्शन दीजे श्याम को, मुरली बाजै इन्द्र गाजै।
भेर बाजै सघरी, जमनां तीरां निरमल नीरा।।
उजल शरीरापधरी वनराय वन में सन्त गावै, कृष्ण गावै रिध पावै।।
मुनिजन ध्यान आवसी, जब कुं जलमीया श्याम मिलियां रंग रलियां गावसी।।12।।
सतभामा थारो रूप भारी, कृष्ण लारे आवसी।
कृष्ण परणी राधा तरूणी, कृष्ण परणी गोपका।।
रूकमणी, रम्भा केल खम्भा, कनक थम्भा ओपका।
कृष्ण परणी मंगल करणी, वेद वरणी ध्यावसी।।
कवि सेवतां सा कामनाया सां, बिजवासी ध्यावसी।
राधा–रूकमण कृष्णवर, कह दुर्वासा बाच।।
अंक विधाता लिख दिया, पढ़ बोलो कह साच।।3।।

शिव विवाह पाटी

दोहा : प्रथम गणपत ध्याय के, विनऊँ शारदा माय।
विघ्न हरण मंगल करण, मोह मुख सदा सहाय ।।1।।
शिव शंकर के ब्याह को, बरणूं साखोचार।
ब्रह्मादिक सब देवता, मुनिजन करत विचार।।2।।
करत राज सत जुग विखे, हेमांचल भोपाल।
तांके घर कन्या भई, गंवरी रूप रसाल।।3।।
वाकै बर देखण चले, लियो ऊकीरो हाथ।
दुल्हो न पायो गोरी सम, वर पायो सिभूं नाथ ।।4।।
दियो ऊकीरो विप्र जूँ, शिवजी रे कर माय ।
जोगी अगम अपारगत, किण सूँ न जाणी जाय ।।5।।
सुरनर मुनिजन कर जोड़ कै, करै है ज शंकर सेव।
कैलाश परबत अधिक है, शंकर राज सु देव ।।6।।

हेमांचल भोपाल के, करै जुं ब्याव समाज।
अति आनन्द सब नगर में, घर घर भूषण साज।।7।।
अति ऊचित रथ साज के, कुन्दन रचित विवांन।
चढ़ अटा देखै सखी, निरखत शंकर जान ।। 9।।

चढ़ वृषभ जद आईया, पूर्ण शंकर देव।
चढ़े नगर में आविया, खलकन पायो भेव।।9।।

काना मुंदरां झिगमिगे, गल रूंडन की माल।
सर्पन की शैली गलै, बाघम्बर मृगशाल ।।10।।

खलकत गंगा जटा में, भलकत चन्द लिलाट ।
रक्त नैन सब देख कै, शोभा कही जूँ थाट ।। 11।।

अंग बभूत रमाय कै, डबरूँ कर त्रिशूल ।
आरोग्य विजीया इधक, शिव है सुख की मूल ।।12।।

अवधूत भैख कूं धार कै, बैठे पिणघट आन।
नर नारी देखे सकल, देखे नृप अग्यान।।13।।

जोगी कूं कन्या दई, राणी कियो अभिमान।
तब उमा रूप धार कै, गई जूं शिव के जान ।।14।।

तुम अनाथ के नाथ हो, आप प्रभु सब जोग।।
ऐसो रूप धारण करो, सुख पावै सब लोग।। 15।।

तब शंकर कर धार के, पूरचो नाद बिसेख ।
बरण बरण के देवता, आण मुनि अलेख।।16।।

चढे हंस पे आविया, ब्रह्मा जाको नाम।
चढ़ गरूड़ प्रभु आविया, मुरत सुन्दर श्याम।।17।।

ऐरावत इन्द्र चढ़यो, सप्त मुखी परभान।
श्याम कीरत कु आदले, बणी जो इधकी जान।।18।।

चंवरी दुलहन आविया, कलस बधावण भांम।
गाल्या गावै कामणी, ले ले साजन नाम।।19।।

हीरा के अक्षत भए, रच्यो ज्यूं सायर कुंभ।
माठो इधक रचाइयो, दे दे केला थंभ।।20।।

रतना चौक पुराय कै, ब्रह्मा वेद उचार।
चतुर वेद प्रकट किया, हुवा जै जे कार।।21।।

पश्चिम तो कन्या भई, पूर्व को वर कीन।
कलस दियो ईसांन में, कन्या दान जूं दीन ।।22।।

पहलै फेरे दुहलन फिरी, चौथे दुल्हो जान।
या विध फेरी गवरजा, यूं किनो सनमान ।।23।।

अन्तर पट तणाय कै, लीनी बांवै अंग ।
चंद बदन मृगलोचनी, चंपक बदन सुरंग ।।24।।

जन्म जन्म की भारजा, सदा रूप अधरंग।
आद सकत जद औतरी, असुर सुधारण संग ।।25।।

विघ्न हरण मंगल करण, असट सिध दे दान।
हथलेवो बोह भांत सूं, कियो अति सनमान।।26।।

रतन क्रोड़ कंचन दियो, अश्व गज रथ निसांन ।
तुम स्वामी मेरे प्रभु, निश्चल चांद अरू भांन ।।27।।

हेमाचल कर जोड़ कै, करी जुं शंकर सेव।
तुम्हारी सरबर कुण, त्रिभवन नायक देव ।। 28।।

परलै काल में अटल हो, त्रिभवन में हो आप ।
आद अन्त सब कोई कहे, तुम्हरे भजन प्रताप।।29।।

देव दाणू सब ही रच्या, धरम, अरथ सब थाय।
कई जात का देवता, आया नाद बजाय।।30।।

ऐसे ऐसे देवता, यक्ष गन्धर्व जे आय।
ब्रह्मादिक आनन्द भए, सोभा कही न जाय।।31।।

सासूं कीनो आरतो, फिर फिर दे आशीस ।
महादेव और गवरजा, जीवो क्रोड़ वरीस ।।32।।

वर से वचन मांगने का मन्त्र

अन्नपूर्णा मुझे बनाना, अपने घर की नाथ।
पाक प्रणाली प्रबन्ध, रखने मेरे हाथ ।।1।।

बल वर्द्धन को सुख दुख में, रखना सहचरी बनाय।
ग्यारह हो जाते है तब, जब एक फल मिल जाय ।।2।।

मेरे देख रेख मे रखना, धन सम्पति भण्डार।
सारे आय-व्यय हो मेरी, सम्मति के अनुसार।।3।।

जीवन भर सुख देना मुझको, है जीवन आधार।
ओरों के आगे मत करना, कुछ अनुचित व्यवहार।।4।।

घर की पौली रहे न खाली, गोधन से भरतार।
दुध दही पर पुरा पुरा, हो मेरा अधिकार ।।5।।

ऋतु अनुकूल धर्म को करना, कभी नियम मत भंग।
तीर्थ यज्ञदानादि कर्म में, रखना मुझ को संग।।6।।

वधू से वचन मांगने का मंत्र

वन उपवन में देवी अकेले, रखना कभी न पैर।
पति के संग बिना पत्नी की, नहीं है अच्छी सैर ।।1।।

सुरा सेवियों मतवालों से, कभी ना करना बात ।
कुसंगियों की संगति में है, ना ना विधि उत्पात ।।2।।

बे पुछै और बिना बुलायें, मायकै हो न पयान ।
अपने आप कही जाने पर, होय नहीं सन्मान ।।3।।

शील छोड़ कर कभी न हंसना, रखना यह मर्याद ।
अधिक हास्य से पैदा होता, ना ना भांति विवाद ।।4।।

पति कितना ही दीन-हीन हो, रखना उस पर थार ।
निगमागम यह बतलाये है, नारी धर्म का सार ।।5।।

इस प्रकार जब मन्त्र, हुआ वचन का दान ।
तब वर के वामांग में, मिला वधु को स्थान ।।6।।

बन्दी जन के वेश मे, आये चारों वेद ।
मुख्य मुख्य ही शक्ति, समझ सकी यह भेद ।।7।।

प्यारे शब्दों मे दिया, इस प्रकार वरदान।
चिरंजीवी हो वर-वधू को, बढै सौख्य सम्मान।।8।।

जब तक जटाओं में शंकर के, गंगा की धारा विराज रही ।
लक्ष्मी पति के वक्ष स्थल पर, जब तक भृगुलता विराज रही ।।9।।

तब तक यह वानक बाना रहे, जब तक चांद चांदनी रहे।
यह बना रहे, वह बनी रहे, नित बना-बनी में बनी रहे।। 10।।

कण कंकण केश जटा मुकुट, मिण माणक मोती आभरणा।
गजनील गजेन्द्र गनधिपति, मम तुष्ट विनायक हस्त मुखी।।

चौजुगी

सतजुगै मझै ऊपनी पिरथमी आकाश लो मण्डपों।
धरती तो बरखमी बसत तो पीलवी धम्भा तो सोनवा ।।
बरो तो ईश्वरो कन्या तो पारबती बिरामणो तो बिरमाजी।
वेद तो रघुवेद भणते-गुणते हमो-तमो स्वामी जी।
पुण्य वाचा-महा विष्णु फरमाया ब्रह्मा ने, ब्रह्मा फरमाया शिव ने,
शिव फरमाया सृष्टि ने, सत तू, सहाय तू, ओ वर आ कन्या
सही है, पढ़ बोलो सत स्वाहा ।।1।।

त्रेता जुगे मझै अपनी पिरथमी, आकाश लो मण्डपो ।
धरती तो बरखमी, बसन्त तो पीलवी।
थम्भा तो रूपवां, बरो तो रामचन्द्र जी।।
कन्या तो सीता सतवती, विरामणो तो वशिष्ठ मुनि।
वेद यजुर्वेद भणते-गुणते, हमो-तमो स्वामी जी पुण्यवाचा।
महा विष्णु फरमाया ब्रह्मा ने, ब्रह्मा फरमाया शिव ने।
शिव फरमाया सृष्टि ने, सत तू सहाय तू ओ वर आ कन्या।
सही है पढ़ बोलो सत सहाय।।2।।

द्वापर जुगे मझै ऊपनी पिरथमी, आकाश लो मण्डपो।
धरती तो बरखमी वसन्त तो पीलवी, थम्भा तो ताम्बॉ।
वरो तो कृष्ण देव, कन्या तो रूकमणी, बिरामणों तो दुर्वासा ऋषि।
वेद तो सामवेद, भणते-गुणते, हमो-तमो स्वामी जी पुण्य वाचा।
महा विष्णु फरमाया ब्रह्मा ने, ब्रह्मा फरमाया शिव ने।
शिव फरमाया सृष्टि ने, सत तू सहाय तू ओ वर आ कन्या।
सही है, पढ़ बोलो सत सहाय।।3।।

कलजुगे मझै ऊपनी पिरथमी आकाश लो मण्डपों।
धरती तो बरखमी, बसंत तो पीलवी, थम्भा तो तेणवा।
वरो तो है निकलंकी, कन्या तो पदमावती बिरामणों तो
फरसराम जी ऋषिश्वर, वेद तो अथर्ववेद, भणते-गुणते।
हमो-तमो स्वामी जी पुण्य वाचा, महा विष्णु फरमाया ब्रह्मा ने।
ब्रह्मा फरमाया शिव ने, शिव फरमाया सृष्टि ने, सत तू-
सहाय तू-ओ वर आ कन्या सही है।
पढ़ बोलो सत स्वाहा ।।4।।

चौरासी बोल

सतनारायण सिंवरीयै, सिंवरियां सदा सहाय ।
ब्रह्म सता सूं वीनती, अक्षर दो समझाय ।।1।।

कळचाली हुई कूपै, देश पति सूं दांव।
भंडारी गिरधर भणै, कोई एक करो उपांव ।।2।।

ओवण जाम्भाणो, अवसर मिलिया सेठ ।
कां तो तुलसी बाढस्यां, कांई नाणो लेसां नेठ ।।3।।

इण विध मूथो आवियो, सर सों ऐल सवाल ।
खेजड़ली दिस चढ़ खड़ो, चेलो आयो चाल।।4।।

बढ़कर भाई बोलिया, भेळी करो जमात ।
मिलकर सारा आविया, माता पूत समात ।।5।।

गुड़ो बुलायो गाढ़कर, सर मिलिया सताब।
पान पड़ता तन पड़े, इसड़ो कह्यो जवाब।।6।।

ओ वचन सुणतां उठियां, बाढ़ै तुलसी वन।
हळ हुकल हो रही, फैर 'ज सोच्यो मन।।7।।

भादू' न बिणियाल लोळ, गोदारा न खोड।
सहू पोटलिया सरसू, हुवै न किण सूं होड।।8।।

खोखर खावा बूड़ीया बाबल मालम थापन मांय।
ढाका कालीरावणा सम, नव कोटि में नांय ।।9।।

सांचो गांव बढ़ेर रामड़ास कागद दियो लिखाय ।
चिट्ढी मैलो चोखलै, भेळां हुइजो आय ।। 10।।

सुणियो न्यात जमात में, ओजूणो ओसाण।
ऊबां धरमन पालटां, जोर 'न देसां जाण।।11।।

बे कांरा घणा बखाणो, बड़त हिंगोली डावरो ।
तिलवासण सरसू सारो ।।12।।

कायम जस कोसाणै।
बोयल कापरड़ै लांबै सूद बखाणै।।13।।

पीथावास बड़ी रूद पाई।
बावरलै धर्म आद बढाई।। 14।।
बिसलपुर सरअटी बाजी।
रिद सदा रूड़कली राजी।।15।।
शोभा जुड़ नेतड़े, नांदिये सवाई।
बंदड़े धर्म आद बढाई।।16।।
अरहटियो जस धारी।
ताबड़ियो पुनः भारी।।17।।
खुडोलाव सदा हितकारी ।
पुन डोली प्रीत प्यारी ।।18।।
जोलियाळी जस पावै।
धर्म घणो मोडी मैलबे धवै लुणावै।।19।।
फींच रोहिचो जस फाबै।
सुजस लियो इण बाबै।।20।।
ओपे है मिणधारी।
जिणरी सायब बात संवारी।।21।।
हरि भगत सुरपरो दोहोरियो लोहरड़ी।
बढ़ केरू बेरू न सालोड़ी।।22।।
शोभा जाटियावास सहन्तो।
कुड़ खोखरियो हिगुणियो गिणन्तो।।23।।
हुणगांव चढन्तो पाणी।
धोरू बुरचां ने बिराणी।।25।।
फिटकासण 'न भगतासण 'न सांगासण 'न ।
बढ़ बेगड़िया 'न बासण ।।25।।
बाळो भाकराणी झालामळिये बिड़दाई।
मलार, पांचले रिद्ध पाई।26।।
तापू खिंदाखोरे – तोरे।
बढ़त काबड़ै बीजे बगेरे।।27।।

चित चोखे न चेराई।
खेतावासर कानावास ने ढिकाई।।28।।
नोसर राडियो वदितो भीकमकोर पंवारो वासो।
झालामण्ड सरमांडी गांव सरासो।।29।।
मेहमां नित गांव मतोड़े।
जस चाडी शोभा जोड़े।।30।।
जाखण रिड़मतसर हरूाई।
भारी डाबड़ी लिवी भलाई।।31।।
पंचसकरी पीलवै पराजो।
जस पांचोड़ी गुण गाजो।।32।।
जुणादेसर ने अवादो।
भारी कुड़सी ने भवादो।।33।।
भळ बागोरियो बिगतायो, रावर ओळिया रिमजाणी ।
ज्यांरी कवियो बात बखाणी।।34।।
हरिनाम सदा मुख हेरे।
बे बणिया जोधाण बघेरे।।35।।
चिट्ठी बांच-बांच चालिया, मरूधर रा मेरूत।
आय खेजड़ली भेळां हुवां, सारी बात सबूत।।36।।
बढ़ दान स्नानां सांजै।
भळ तागाला हथ बाजै।।37।।
तागै ने बूझै कोई।
तो भेळा आंण हुयां विश्नोई।।38।।
आडा 'ई विश्नोई आया, गुण गोमंद-गोमंद गावै।
तुलसी राखै तागाळा, रु 'या का मिसल रचावै ।।39।।
ऊमो, किसनो खड़िया, हरदास तणो हताणो।
पंथ तणो परकासो, खेजड़ली हुयो खडाणो।।40।।

नोट : ये चौरासी बोल मुख्य रूप से खेजड़ली खडाणे में भाग लेने वाले चौरासी गांवों में ही बोले जाते हैं।

ध्रुव स्तुति (इंदव छंद)

लियो ध्रुव ने उठाय, लीयो कंठ सूं लाय ।।1।।
धरयो विष्णु कर सीस, कृपा कीनी बीस्वा बीस ।।2।।
नमो तू आगाध, जपै सब साध ।।3।।
नमो निराकार, जगत आधार ।।4।।
नमो जगदीश, सुरनर के ईश ।।5।।
जमो जगदेव, अलख अभेव ।।6।।
जनो जगनाथ, अनाथ के नाथ ।।7।।
नमो जगनाथ, कहां लो बखान ।।8।।
नमो भगवत, अपार अनंत ।।9।।
नमो भगवान, न होय बखान ।।10।।
नमो श्रीराम, सरै सब काम ।।11।।
नमो श्रीपत, सुभगत निगत ।।12।।
नमो हरिराम, लिख्यो नहीं जाय ।।13।।
नमो हर आप, अजाप अजाय अधाप ।।14।।
नमो श्रीकृष्ण, व्यापक ब्रह्म ।।15।।
नमो गोविन्द, निरंदइंद ।।16।।
नमो गोपाल, सभी प्रतपाल ।।17।।
नमो दीनानाथ, जहां तहां साथ ।।18।।
नमो परब्रह्म नै, लाग ही क्रम ।।19।।
नमो तू दयाल, सु भगत प्रतपाल ।।20।।

दोहा : जीव कहां स्तुति करे, महया अगवम ।
अगाध ! जन गोपाल ध्रू बचन यह, वेद कहे सब साच ।।

-: विवाह पाटी सम्पूर्ण :-